नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

स्थानीय निकायों को मजबूत करने की कोशिश

मध्य प्रदेश सरकार ने नगर पालिकाओं और नगर पंचायतों के अध्यक्षों का चुनाव अब प्रत्यक्ष मतदान से कराने का जो फैसला लिया है, वह केवल प्रशासनिक बदलाव नहीं, बल्कि स्थानीय राजनीति के स्वरूप में एक बड़ा हस्तक्षेप है. वर्षों से चल रही अप्रत्यक्ष प्रणाली, जहां पार्षद अध्यक्ष चुनते थे, अब इतिहास बनने जा रही है. यह निर्णय लोकतंत्र की जड़ों को मजबूत करने के दावे के साथ आया है, लेकिन इसकी चुनौतियां भी कम नहीं हैं.

सबसे पहले बात फायदे की. सीधे चुनाव की सबसे बड़ी उपलब्धि है जवाबदेही. जनता जिस व्यक्ति को वोट देकर चुनती है, उससे वह सवाल भी पूछती है और काम भी. अप्रत्यक्ष चुनाव में अध्यक्ष अक्सर पार्षदों के समीकरणों और सौदेबाजी के बीच उलझा रहता था. खरीद-फरोख्त और गुप्त सौदे राजनीति का हिस्सा बनते चले गए थे. प्रत्यक्ष चुनाव इन खेलों पर रोक लगाने की उम्मीद जगाता है. इसके साथ ही सीधे चुना गया अध्यक्ष एक मजबूत जनादेश लेकर आता है, जिससे नेतृत्व स्थिर होता है और निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है. स्थानीय निकायों में यह भी देखा गया है कि वार्ड-स्तर की राजनीति कई बार पूरे शहर के विकास पर भारी पड़ जाती है. प्रत्यक्ष चुनाव में उम्मीदवार को पूरे नगर की जनता से संवाद करना होता है, जिससे वह व्यापक मुद्दों पर बात करने को मजबूर होता है, सड़कें, पानी, सफाई, विकास की दिशा. यह परिवर्तन नगरीय विकास के विज़न को एक नई दिशा दे सकता है. लेकिन हर सुधार अपने साथ कुछ नए खतरे भी लाता है. सबसे बड़ा खतरा है कि अध्यक्ष और पार्षदों का बहुमत विपरीत दलों में होगा तो टकराव तय है. प्रशासन चलाने के लिए सहयोग अनिवार्य है. यदि अध्यक्ष जनता से सीधे चुना गया हो और पार्षद किसी दूसरे राजनीतिक खेमे से हों, तो विकास के फैसले फाइलों में ही अटक सकते हैं. यह स्थिति जनता के लिए भारी पड़ेगी.

दूसरी चुनौती है चुनाव खर्च. प्रत्यक्ष चुनाव में प्रचार बड़े पैमाने पर करना पड़ता है. इससे यह आशंका भी है कि मजबूत वित्तीय नेटवर्क वाले उम्मीदवारों का दबदबा बढ़ेगा, जबकि सरल पृष्ठभूमि के उम्मीदवार पीछे धकेल दिए जाएंगे. तीसरी चिंता पार्षदों की भूमिका को लेकर है. स्थानीय स्तर पर सबसे पहले जनता तक पहुँचने वाला जनप्रतिनिधि पार्षद ही होता है. लेकिन अध्यक्ष पद अत्यधिक शक्तिशाली हो गया तो पार्षदों की आवाज कमजोर पड़ सकती है. सीधे चुनाव का एक और पहलू है धनबल व बाहुबल का असर. बड़े चुनाव का आकार बढ़ता है, तो जोखिम भी बढ़ता है. निष्पक्षता को सुरक्षित रखने के लिए सख्त निगरानी और पारदर्शी प्रक्रियाओं की जरूरत पड़ेगी. इसलिए इस फैसले की सफलता केवल कानून बदल देने से नहीं होगी. राज्य सरकार को यह सुनिश्चित करना होगा कि अध्यक्ष और पार्षदों के बीच सहयोग की संस्थागत व्यवस्था बनाई जाए. विवाद की स्थिति में समाधान के स्पष्ट प्रावधान हों. इसके अलावा, स्थानीय निकायों को वास्तव में वित्तीय और प्रशासनिक अधिकार दिए जाएँ. केवल पद बदलने से शासन नहीं सुधरता, क्षमता, संसाधन और स्वतंत्रता भी ज़रूरी हैं. प्रदेश सरकार का यह कदम निश्चित रूप से नागरिक लोकतंत्र को नया आयाम देता है. जनता को अपने नगर प्रमुख का सीधा चयन करने का अधिकार देना स्वागत योग्य है, बशर्ते सरकार यह समझे कि चुनाव के साथ-साथ शासन की गुणवत्ता सुधारना भी उतना ही आवश्यक है. दरअसल, अगले कुछ वर्षों में यह मॉडल तय करेगा कि क्या स्थानीय लोकतंत्र वास्तव में मजबूत हुआ, या फिर यह केवल राजनीतिक प्रयोग बनकर रह गया. फिलहाल उम्मीद यही है कि यह बदलाव शहरों को नई दिशा और नई ऊर्जा देगा.

भारतीय लोकतंत्र की गीता : हमारा संविधान

नरेंद्र सिंह तोमर
अध्यक्ष, मध्य प्रदेश विधानसभा

हम 26 नवंबर 2025 को 76 वां संविधान दिवस मनाने जा रहे हैं. एक वर्ष पूर्व हमारे संविधान का अमृतकाल वर्ष प्रारंभ हुआ था. संपूर्ण वर्ष हमने संविधान के सम्मान में 'संविधान गौरव अभियान' मनाया और संविधान निर्माताओं के प्रति अपनी कृतज्ञता को ज्ञापित किया. हमारे लिए संविधान दिवस की तिथि न केवल एक औपचारिक स्मृति है, बल्कि उन मूल्यों, आदर्शों और संकल्पों का वार्षिक पुनर्मूल्यांकन भी है, जो हमारे लोकतंत्र की नींव है.

संविधान ने भारत को एक आधुनिक, समतामूलक, लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में स्थापित किया और नागरिकों को अधिकार, अवसर और गरिमा की सुरक्षा सुनिश्चित की. आज राष्ट्र कृतज्ञ है संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद और संविधान के मुख्य वास्तुकार संविधान प्रारूपण समिति के अध्यक्ष बी. आर. आंबेडकर एवं अन्य सदस्यगणों का, जिन्होंने अपनी दूरदर्शिता, राष्ट्र के प्रति निष्ठा और जन कल्याण की भावना से एक ऐसा ग्रंथ तैयार किया, जिसे हम भारतीय लोकतंत्र की गीता कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी.

हमारे संविधान की विशेषता यह है कि यह परिवर्तनशील समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित होने की क्षमता रखता है. यही कारण है कि पिछले 7 दशक में संविधान ने अपने मूलभूत सिद्धांतों को अक्षुण्ण रखते हुए समाज, प्रशासन और न्याय व्यवस्था में समयानुकूल परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया है. हमारा संविधान जन-जन की भावनाओं, आकांक्षाओं का प्रतीक है. संविधान ने राष्ट्र को राह दिखाई है और समय-समय पर स्वयं में संशोधन करके लोकतांत्रिक मूल्यों को और अधिक सशक्त भी किया है. महिलाओं का सशक्तिकरण: संविधान में अब तक 106 संशोधन हो चुके हैं. हाल ही में हुआ 106 वां संशोधन इस देश की आधी आबादी अर्थात नारी शक्ति के सशक्तिकरण को समर्पित है.

दशकों से लंबित महिलाओं के हक की एक मांग को नरेंद्र मोदी ने 'नारी शक्ति वंदन' अधिनियम 2023 के माध्यम से साकार किया है. लोकसभा एवं राज्यों की विधानसभाओं में महिलाओं के लिए एक तिहाई सीटों का आरक्षण भारत में महिला नेतृत्व को एक नया आयाम देता है. 5 अगस्त 2019 को संविधान में हुआ संशोधन स्वतंत्र भारत का सबसे बड़ा ऐतिहासिक निर्णय माना जा सकता है. जम्मू कश्मीर और लद्दाख के लिए संविधान में प्रावधानित अनुच्छेद 370 और 35 ए को हटाए जाने से श्यामा प्रसाद मुखर्जी का 'एक देश, एक विधान, एक प्रधान' का संकल्प स्वतंत्रता के 70 वर्ष उपरांत पूर्ण हो पाया.

तीन आपराधिक कानून: भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य संहिता को लागू करके भारत सरकार ने दंड के स्थान पर न्याय की अवधारणा को धरातल पर उतारा है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चिंतन में सदैव पहली प्राथमिकता कमजोर वर्ग को सशक्त कर उसे समाज की मुख्य धारा में लाने की रही है.

संविधान के 103 वें संशोधन के माध्यम से वर्ष 2019 में भारत सरकार ने सामान्य वर्ग के कमजोर आर्थिक वर्ग वाले परिवारों को 10 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया है. संविधान जन-जन की आशाओं का प्रतिबिंब है. 7 जून 2024 को मोदी ने मोदी-3 सरकार की शुरूआत करते हुए संसद के सेंट्रल हॉल में संविधान की पवित्र पुस्तक को माथे से लगाकर नमन किया था. नरेंद्र मोदी की भारतीय संविधान में आस्था न केवल इन दृश्यों से अपितु उनके हर निर्णय से स्वत: परिलक्षित हो रही है.

7 नवंबर 2025 को संपूर्ण राष्ट्र ने राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम' की 150 वीं वर्षगांठ को एक महान स्मरणोत्सव के रूप में मनाया. उत्तर से दक्षिण तक और पूर्व से पश्चम तक समवेत स्वर में स्व. बंकिमचंद्र चटर्जी की अमर रचना 'वंदे मातरम' की गूंज है. आज जब भारत विश्व मंच पर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, तब संविधान हमें अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए आधुनिक प्रगति की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है.

ग्वालियर चंबल डायरी

बीएलओ को तनाव से बचाने अब दोस्ताना माहौल बना रहे अफसर

हरीश दुबे

'मैं, ग्वालियर जिले की कलेक्टर रुचिका चौहान हूं, क्या आपको गणना पत्रक मिला है. यदि मिला है तो उसे भरकर बीएलओ को वापस करें.' एसआईआर अभियान के दौरान ग्वालियर कलेक्टर रुचिका चौहान कुछ इसी अंदाज में लोगों के घरों पर दस्तक दे रही हैं. बीएलओ और आम जनता, दोनों की ही परेशानियों से बखूबी वाकिफ हैं कलेक्टर साहिबा. काम के दवाब के चलते बीएलओ तनाव के शिकार न हों और ईएफ डिजिटलाइज्ड का काम भी निर्धारित अवधि तक पूर्ण हो जाए, इस पर कलेक्टर का खास ध्यान है.

कलेक्टर कभी केआरजी कॉलेज पहुंचकर यहां देर रात तक चल रहे ईएफ के संग्रहण व डिजिटलाइजेशन कार्य की अपडेट स्थिति की जानकारी लेती हैं और फिर बीएलओ की पूरी टीम को आपनी तरफ से समौसे खिलाती हैं. इतना ही नहीं, बीएलओ में जोशे जज्बा बनाए रखने के लिए ग्वालियर का जिला प्रशासन कई इनामी स्कीम लेकर भी आया है, मसलन श्रेष्ठ कार्य करने वाले बीएलओ को पर्यटन विभाग के होटल तानसेन में सपरिवार भोजन के कूपन प्रदान किए जा रहे हैं. इस हौंसला अफजाई ने ग्वालियर में एसआईआर को रफ्तार दी है, यही वजह है कि ग्वालियर जिले में अभी तक 55 प्रतिशत से ज्यादा गणना पत्रक डिजिटाइज्ड किए जा चुके हैं. ग्वालियर जिले में जिन बीएलओ ने अपने-अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर समय रहते अपना सम्पूर्ण कार्य शतप्रतिशत पूर्ण कर लिया है उन्हें कलेक्टर साहिबा ने अपने दफ्तर बुलाकर सम्मानित कर उनके उत्कृष्ट कार्य के लिये उनकी तारीफ कर हौंसला बढ़ाया. सूबे के तमाम जिलों से जहां काम के बोझ तले दबे बीएलओ के बीमार पड़ने और अस्पतालों में भर्ती होने की खबरें मिल रही हैं वहीं ग्वालियर अंचल में फिलवक्त सब कुछ ठिकाने पर है.

महिला और युवा मोर्चा हाथ से निकले, अब माइनॉरिटी पर नजर

कमल दल में नौजवानों और महिलाओं के मोर्चों की कमान हासिल करने में ग्वालियर चंबल और बुंदेलखंड को नाकामी मिली और यहां से उभरी दावेदारियों को नकारकर पार्टी नेतृत्व ने महाकौशल और मालवा को तरजीह दी. बहरहाल, ग्वालियर वालों ने अब माइनॉरिटी सैल के लिए ताकत लगा दी है. मोर्चा संगठनों के अध्यक्ष तय करते समय पार्टी ने माइनॉरिटी सैल को होल्ड पर रखा है, बस यहीं से ग्वालियर की उम्मीदें शुरू हो गईं. शिवराज सरकार के दौर में मदरसा बोर्ड संभाल चुके नियाज़ मौहम्मद और कई बड़ी कमेटियों में रह चुके एड. शिराज कुरैशी के नाम चले तो लंबे समय से भाजपा से जुड़े सईद सिंधिया ने अपने दामाद सादिक खान मेव का नाम आगे बढ़ाया है. माइनॉरिटी सैल के कौमी सदर के बीते रोज उनकी कटोराताल कोठी पर तशरीफ लाने और वहां हुए जोरदार इस्तकबाल से इन अटकलों को और बल मिला. ग्वालियर चंबल अंचल में मुस्लिम, सिख और ईसाई आबादी की बहुलता के आंकड़े बताते हुए माइनॉरिटी सैल की सदारत के लिए ग्वालियर की दावेदारी पेश की गई है.

मेला में सिर्फ एक महीना बाकी, तैयारी सिफर

सवासौ साल का शानदार अतीत रखने वाले ग्वालियर व्यापार मेला के इस वर्ष के आयोजन में आज से सिर्फ एक महीना बचा है लेकिन जमीन पर तैयारियां सिफर नजर आ रही हैं. दुकानों के ऑनलाइन आवेदन की आज आखिरी तारीख थी लेकिन अभी भी सभी दुकानदारों के आवेदन नहीं हो सके हैं. अपनी दुकानें ब्लैक में बेचने वाले तीन दुकानदारों को ब्लैकलिस्टेड भी किया गया है.

रामलला के बाद कृष्णलला... बागेश्वर बाबा ने दे दिए संकेत

अयोध्या में रामलला के मंदिर निर्माण के बाद साधु संतों, संघ और भाजपा का अगला मिशन क्या मथुरा में श्रीकृष्ण जन्मभूमि से जुड़ा हो सकता है. बागेश्वर बाबा संकेत तो कुछ ऐसे ही दे रहे हैं. शिवपुरी में चल रही कथा में बागेश्वर बाबा ने यह नारा भी लगा दिया, 'कृष्ण लला हम आएंगे, माखन मिश्री खाएंगे, जिन्हें दिक्कत हो वो खिसक लें.' उनके इस वक्तव्य को मथुरा जन्मभूमि विवाद से जोड़कर देखा जा रहा है. बागेश्वर बाबा ने हाल ही में दिल्ली से वृंदावन तक पदयात्रा भी की थी. ये संकेत बता रहे हैं कि 29 के चुनाव से पहले साधु संत मथुरा जन्मभूमि विवाद को लेकर बड़ा आंदोलन खड़ा कर सकते हैं. वैसे यह मामला अभी न्यायिक प्रक्रिया में है और भाजपा ने आधिकारिक तौर पर इस मसले पर अभी कोई टिप्पणी नहीं की है लेकिन साधु संत खुलकर अपनी राय रखने में जुटे हैं.

डॉलर के मुकाबले रुपये की भारी गिरावट

विदेशी भारत में अपना निवेश बढ़ा सकते हैं. भारत रूस से तेल का आयात कम कर देगा. फिर भी बांग्लादेश के टका तथा वियतनाम की मुद्रा डांग की तुलना में रुपये का कम अवमूल्यन हुआ है. इन दोनों देशों से भारत की विश्व बाजार में प्रतिस्पर्धा है.

रुपया पहली बार डॉलर के मुकाबले इतना ज्यादा कमजोर हुआ है. 89.40 रुपए का 1 डॉलर हो गया. रिजर्व बैंक इसमें कोई हस्तक्षेप नहीं कर रहा है. बाजार को उसका संकेत स्पष्ट है कि वह हमेशा रुपये की मदद करने आगे नहीं आ सकता. सितंबर मध्य से रिजर्व बैंक का विदेशी मुद्रा भंडार घटकर 10 अरब डॉलर रह गया है. वह इसे बाजार में लाने की बजाय आरक्षित रखे हुए है. इस वजह से आयातकर्ताओं की परेशानी बढ़ रही है. यदि डॉलर और मजबूत होता चला गया तो रुपये के मूल्य में और गिरावट आ सकती है. देश की आजादी के समय रुपये का ब्रिटिश पाउंड स्टर्लिंग से विनिमय मान्य था. तब 1947 में 1 रुपया बराबर 1 डॉलर था. 1965 में 4.50 रु. प्रति डॉलर था. 1985 में 13.50 रु. का 1 डॉलर था 2015 में 63 रुपये बराबर 1 डॉलर था. भूमंडलीकरण, रूस-यूक्रेन युद्ध तथा इजराइल-हमास संघर्ष की उथल-पुथल में डॉलर महंगा होता चला गया. कमजोर रुपये की वजह से विदेश व्यापार पर असर पड़ना तय है. निर्यात अधिक प्रतिस्पर्धी हो जाएगा. विदेशी भारत में अपना निवेश बढ़ा सकते हैं. भारत रूस से तेल का आयात कम कर देगा. फिर भी बांग्लादेश के टका तथा वियतनाम की मुद्रा डांग की तुलना में रुपये का कम अवमूल्यन हुआ है. इन दोनों देशों से भारत की विश्व बाजार में प्रतिस्पर्धा है. कमजोर रुपये से अधिक विदेशी मुद्रा भारत में आएगी. विदेशियों का भारत पर्यटन बढ़ सकता है. भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर संजय मल्होत्रा ने कहा है कि आवश्यक सुरक्षा कदम कायम रखते हुए वित्तीय स्थायित्व बनाए रखना उनकी प्राथमिकता है. रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर एन. रघुराम राजन ने भी कहा कि इस समय रिजर्व बैंक का कोई भी हस्तक्षेप भारत के निर्यात को नुकसान पहुंचाएगा. इस स्थिति में रोजगार के अधिक अवसर पैदा करने और घरेलू उपभोग बढ़ाने पर ध्यान देना होगा.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

कुछ न कुछ रंग लाता नतीजा राजनीति में चाचा-भतीजा

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, हमें चाचा-भतीजे की राजनीति के बारे में बताइए. यह किन राज्यों में है और किन घरानों में चली आ रही है?'

हमने कहा, 'भारत से लेकर अमेरिका तक चाचा को महत्व दिया गया है. सुपरपावर अमेरिका खुद को दुनिया का काका मानता है, इसलिए उसे 'अंकल सैम' कहते हैं. भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू का जन्म दिवस 14 नवंबर बाल दिवस के रूप में मनाया जाता रहा. बच्चे उन्हें 'चाचा नेहरू' कहते थे. फिर पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम को भी कलाम चाचा कहा जाने लगा. उनकी किताब 'विंग्स ऑफ फायर' पढ़िए तो जीवन में कर्मठ होने की प्रेरणा मिलेगी. धर्मेंद्र और डब्बू कहलाने वाले रणधीर कपूर की एक फिल्म का नाम 'चाचा-भतीजा' था. उसमें गीत था- बुरे काम का बुरा नतीजा, क्यों भाई चाचा, हां भतीजा.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, रील लाइफ की बजाय रीयल लाइफ पर ध्यान दीजिए. राजनीति में चाचा-भतीजे कौन-कौन हैं इसका स्पेशल इंटेन्सिव रिवीजन या विशेष गहन पुनरीक्षण कीजिए.'

हमने कहा, 'पहले महाराष्ट्र की बात करेंगे, फिर राष्ट्र की चर्चा करेंगे. शरद पवार की पार्टी उनके भतीजे अजीत पवार ने तोड़ दी. दोनों की अलग-अलग राकांपा है. ज्यादातर विधायक अजीत के साथ चले गए. अजीत का अपने 85 वर्ष के अंकल से सवाल है- चचा, अब आपके पास क्या बचा? हम तो ले रहे हैं सत्ता का मजा!' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, शिवसेना संस्थापक बाल ठाकरे के भतीजे राज ठाकरे ने अलग पार्टी मनसे बना ली लेकिन अभी मुंबई महापालिका चुनाव देखते हुए राज ठाकरे, उद्धव और शरद पवार ने हाथ मिला लिया है. आपसी स्वार्थ के फेविकॉल से वह आपस में चिपक गए हैं. स्व. गोपीनाथ मुंडे के भतीजे धनंजय मुंडे अपने कारनामों से चर्चा में रहते हैं.'

हमने कहा, 'आप बिहार को क्यों नहीं निहार रहे? वहां पशुपति पासवान जैसे निर्दयी चाचा ने अपने भतीजे चिराग पासवान की पार्टी के 5 सांसद छीन लिए थे और चिराग को 'चांडाल' तक कह डाला था. बाद में पासा पलट गया. इस बार विधानसभा चुनाव में चिराग पासवान की पार्टी ने 19 सीटें जीत लीं. चाचा पशुपति ने भतीजे चिराग को खानदान का चिराग बताकर उनका अभिनंदन किया. चिराग ने भी कहा कि मैंने उनकी गाली को अपने लिए आशीर्वाद माना. कुछ भी हो, वह मेरे लिए बड़े और पितातुल्य हैं.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12093

- डॉ. सागर खादीवाला

ऊपर से नीचे

1. किसी विषय में यह धारणा कि यह ठीक है या नहीं, शंका, संशय 2. जिसके सामने और बीच में रहने पर भी उस ओर की वस्तु दिखाई दे सके 3. मुश्किल 4. कोई बात कहकर उससे फिर जाना 5. एक आंख का, एकाक्ष 9. एक मिष्टान्न जौ सूजी या आटे को घी में भूनकर पानी या दूध में शक्कर के साथ पकाने से बनता है (उर्दू) 11. इकहरे बदन का, दुबला-पतला और हलका 12. रणभूमि, लड़ाई का मैदान 13. फेरीवाला जो बिंदी टिकली चूड़ी आदि बेचता है, चूड़ियां पहनाने वाला 14. किसी का संदेह दूर करने वाली बात या निराकरण 15. अन्न, अनाज 19. जल, पानी

बाएं से दाएं

1. किसी पुस्तक या समाचार-पत्र को क्रम आदि लगाकर निकालने वाला 4. स्थान, जगह, पड़ाव (उर्दू) 6. विलंब 7. चलते-चलते एक बारगी रुक जाना, स्तंभित होना 8. डरना, मन में भय उत्पन्न होना 10. इच्छा करना, चाहना 12. धन की राशि, संपत्ति (उर्दू) 14. जिसमें पूरे के अतिरिक्त चौथाई और जुड़ा हो 15. वह दस्तावेज जिस पर निकाह की शर्तें लिखी जाती हैं (उर्दू) 17. गधा 18. किसी देश या राज्य का वह प्रधान नगर जहां से उसका शासन होता है 20. आपत्ति आक्रमण हानि आदि से बचाव 21. पुरुष जाति का

Solution 12092

हो	म		अ	मृ	त	स	र	
लि	हा	फ		त		मा	त	
का	ज	ल		क		रो		
	न	क	ली		ग	ह		
ह			ल	क	वा		पा	
ल	प	क	ना		क्ष	त्रि	य	
वा		छा		जा		दो	ल	
ई	श्व	र		मा	नु	ष		

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में व्यवसाय में लाभ होगा, पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा, यात्रा का योग है, वर्ष के मध्य में नारी पक्ष से सहयोग मिलेगा, आर्थिक लाभ होगा, किसी विशेष कार्य से लाभांवित होने का अवसर प्राप्त होगा, वर्ष के अन्त में सिर दर्द अनिद्रा जैसे रोगों से कष्ट हो सकता है, जल्दबाजी में वाहन न चलायें, तनाव रहेगा, घरेलू कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को लाभांवित होने का योग है, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को घरेलू कार्यों में नारी पक्ष से आर्थिक संकट हो सकता है, कर्क राशि के व्यक्तियोंको व्यस्तता रहेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को सिर दर्द अनिद्रा रोगों से कष्ट हो सकता है, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को यात्रा का योग है, मकर और कुंभराशि के व्यक्तियों को रूकावटों के बाद सफलता मिलेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को कार्य में व्यस्तता रहेगी.

मेष- कार्यस्थल पर सहकर्मियों से परेशानी होगी, कार्यों में सावधानी रखें, रूकावट एवं असफलता मिल सकती है, परिश्रम अधिक करना पड़ेगा.

वृषभ- आपसी विवादों को टालने में ही लाभ है, घरेलू बातों पर अधिक ध्यान न दें, अतिथि आगमन का योग है, किसी अनसोचे कार्य में व्यस्तता रहेगी.

मिथुन- आकस्मिक लाभ की संभावना है, व्यापारिक समझौते अच्छा लाभ दिला सकते हैं, नौकरी एवं राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी, मन में संतोष बना रहेगा.

कर्क- कार्यक्षेत्र में कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पडेगा, धार्मिक कार्यों में खर्च होगा, आर्थिक समस्या हल होगी, यात्रा लाभदायक रहेगी.

सिंह- चल रहे कार्य में लाभ की संभावना से नई योजना हाथ में ले सकते हैं, यश मिलेगा. शत्रु वर्ग परास्त होगा, धार्मिक कामकाज बनने का योग है.

कन्या- भाग्यवर्धक काम बनने का योग है, नए संपर्क आगे बढ़ने में सहायक रहेंगे, नियमितता का ध्यान रखकर कार्य करना हितकर रहेगा.

तुला- साझेदारी की योजना में पूँजी लगाने से लाभ होगा, किसी कार्य में परिश्रम अधिक करना होगा, खर्च की अधिकता रहेगी, शत्रु नुकसान पहुंचाने का प्रयास करेंगे.

वृश्चिक- पुराने कर्ज से छुटकारा मिल सकता है, उत्तराधिकार में संपतित मिल सकती है, परिवार में मतभेद रहेगा, दूसरों के कारण परेशानी होगी.

धनु- आकस्मिक लाभ की उम्मीद है, दोहरे लाभ का अवसर मिल सकता है, वाहन सावधानी से चलायें, अनावश्यक विवाद को टालें, अतिथि आगमन होगा.

मकर- व्यापारिक अनुबंध लाभदायी रहेगा, मित्रों का सहयोग रहेगा, साहस पराक्रम बढ़ेगा, यश की वृद्धि होगी, नई योजनाओं में लाभ होगा.

कुम्भ- कार्यक्षेत्र में लंबित मामले निपटाना पड़ेंगे, गुमी वस्तु मिल सकती है, कौटुम्बिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी, आपसी लोगों को अधिक भरोसा न दें.

मीन- जमींनि जायजाद प्रापर्टी का लाभ होगा, मन में शांति और संतोष रहेगा, आमोद प्रमोद, के कार्य में व्यय होगा, भरपूर सहयोग प्राप्त होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, सुशील, व्यक्तित्ववान, मिलनसार, आकर्षक एवं तीव्र बुद्धि का होगा, स्वास्थ्य कुछ समय तक नरम गरम रहेगा. बुद्धिमत्ता अच्छी रहेगी, अनेक विद्याओं का ज्ञाता होगा, प्रवास का शौकीन रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

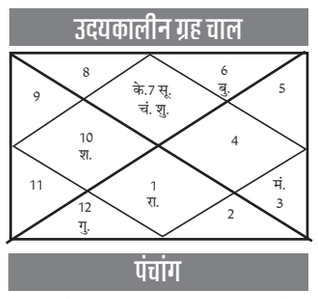

पंचांग

रा.मि. 06 संवत् 2082 मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमीं गुरूवासरे रात 7/24, धनिष्ठा नक्षत्रे रात 10/34, ध्रुव योगे दिन 9/33, गर करणे सू.उ. 6/42, सू.अ. 5/18, चन्द्रचार मकर दिन 10/23 से कुम्भ, शु.रा. 11, 1,2,5,6,8 अ.रा. 12,3,4,7,9,10 शुभांक- 4,6,0.

व्यापार भविष्य

मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमीं को धनिष्ठा नक्षत्र के प्रभाव से सरसों, गुड़, खांड, बाजरा, सुपारी, सौंठ, सोना, आदि में तेजी होगी, रूई, कपास, चांदी, में मंदी होगी, वायदा विचार आज के बने भाव पर व्यापार कर लाभ उठायें. भाग्यांक 3754 है.

SUDOKU 7225

6	9			7	4		8	
	8	5	6	2			4	9
7						6		3
	3	9	5				1	
1				8				5
	6				2	9	3	
4		7						2
8	2			5	9	1	7	
	1		2	3			5	8

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7224

6	5	3	9	1	7	2	8	4
9	1	8	2	6	4	3	7	5
7	4	2	5	3	8	1	9	6
3	7	1	6	9	2	4	5	8
8	6	9	1	4	5	7	2	3
5	2	4	8	7	3	9	6	1
2	9	5	4	8	1	6	3	7
4	3	6	7	5	9	8	1	2
1	8	7	3	2	6	5	4	9